आचार्य शिवपूजन सहाय

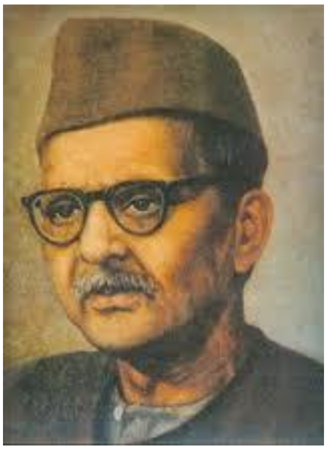

आचार्य शिवपूजन सहाय का जन्म 9 अगस्त, 1893 को बिहार के ग्राम उनवास, थाना इटाढ़ही, जिला शाहाबाद में हुआ था | वर्ष 1939 में वे छपरा के राजेन्द्र कॉलेज में हिंदी के प्राध्यापक नियुक्त हुए जबकि उनकी औपचारिक शिक्षा केवल मैट्रिक तक की थी |

न जाने कितने साहित्य महारथी हिंदी संसार में ऐसे हो गये, जिनके लेखन को उन्होंने संवारा-सजाया | उपन्यास सम्राट प्रेमचंद, राजा रधिका प्रसाद सिंह, जयशंकर प्रसाद की कृतियां उनकी लेखनी का स्पर्श पाकर निखर गईं | प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रमण ने श्रद्धा के फूल में लिखा है "आचार्य शिवजी ने लिखा कम, पर कामायनी की पांडुलिपि में संशोधन करने का गौरव उन्हें ही प्राप्त है| "

उनकी संपादन-कला के विषय में एक बार द्विवेदी ने कहा था, "संपादक के रूप में वे एक माली थे | उसी तरह नये पौधों को रोपते थे | उनकी बेतरतीब झाड़ियों को काट-छांट कर सुरम्य बना देते | उनके द्वारा संपादित पत्र-पत्रिकाएं केवल सामयिक दृष्टि से ही नहीं, साहित्य की स्थायी दृष्टि से भी ग्रंथों की तरह महत्वपूर्ण है | " उन्होंने एक दर्जन से अधिक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन और सह-सम्पादन किया, जिनमें प्रमुख हैं - मारवाड़ी सुधार, आदर्श, मतवाला, मौजी, उपन्यास तरंग, गोलमाल, समन्वय, गंगा, बालक, जागरण, हिमालय, माधुरी |

शिवपूजन सहाय ने समस्त जीवन हिंदी की सेवा की | अपने जीवन का अधिकांश भाग हिंदी भाषा की उन्नति तथा उसके प्रचार-प्रसार में न्योछावर किया | उनकी प्रमुख रचनाएं हैं - गंगा, जागरण, हिमालय, साहित्य, वही दिन वही लोग, मेरा जीवन, समृति शेष, हिंदी भाषा और साहित्य |

आचार्य शिवपूजन सहाय का निधन 21 जनवरी, 1963 को पटना में हुआ |